RATNA JYOTI RATNA JYOTI

# Sample

30 Aug 1988

10:00 AM

Delhi

**Model: Pitridosh-Report** **SrNo: 101-111-105-1030 / 246**

Phone: +91-341-2668022
Mobile : +91-9732150484
Whatsapp : +91-9732150484

RATNA JYOTI®

Website: https://www.ratnajyoti.com/
E-Mail: astrology@ratnajyoti.com

Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan ,W.B , India ,Zip-713322

**तिथि** 30/08/1988 **समय** 10:00:00 **वार** मंगलवार **स्थान** Delhi **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:42:00
**अक्षांश** 28:39:00 उत्तर **रेखांश** 77:13:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:21:08 घंटे

| पंचांग | | अवकहड़ा चक्र | |
|---|---|---|---|
| साम्पातिक काल | 08:13:13 घं | गण | देव |
| वेलान्तर | 00:00:36 घं | योनि | गज |
| सूर्योदय | 05:58:11 घं | नाड़ी | अन्त्य |
| सूर्यास्त | 18:44:43 घं | वर्ण | विप्र |
| चैत्रादि संवत | 2045 | वश्य | जलचर |
| शक संवत | 1910 | वर्ग | सर्प |
| मास | भाद्रपद | युँजा | पूर्व |
| पक्ष | कृष्ण | हंसक | जल |
| तिथि | 4 | जन्म नामाक्षर | दो-द्रोणी |
| नक्षत्र | रेवती | पाया(रा.-न.) | स्वर्ण-स्वर्ण |
| योग | गण्ड | होरा | चंद्र |
| करण | बव | चौघड़िया | चर |

**विंशोत्तरी**
बुध 10वर्ष 5मा 1दि
**शुक्र**
31/01/2006
31/01/2026

| | |
|---|---|
| शुक्र | 01/06/2009 |
| सूर्य | 01/06/2010 |
| चन्द्र | 31/01/2012 |
| मंगल | 01/04/2013 |
| राहु | 01/04/2016 |
| गुरु | 01/12/2018 |
| शनि | 31/01/2022 |
| बुध | 01/12/2024 |
| केतु | 31/01/2026 |

**योगिनी**
उल्का 3वर्ष 8मा 4दि
**भद्रिका**
04/05/2017
05/05/2022

| | |
|---|---|
| भद्रिका | 13/01/2018 |
| उल्का | 13/11/2018 |
| सिद्धा | 04/11/2019 |
| संकटा | 13/12/2020 |
| मंगला | 02/02/2021 |
| पिंगला | 15/05/2021 |
| धान्या | 14/10/2021 |
| भ्रामरी | 05/05/2022 |

| ग्रह | व | अ | अंश | राशि | नक्षत्र | पद | स्वामी | अं. | स्थिति | षट्बल | चर | स्थिर | ग्रह तारा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लग्न | | | 05:27:33 | तुला | चित्रा | 4 | मंगल | सूर्य | --- | 0:00 | | | |
| सूर्य | | | 13:19:12 | सिंह | मघा | 4 | केतु | बुध | मूलत्रिकोण | 1.54 | मातृ | पितृ | सम्पत |
| चंद्र | | | 21:49:38 | मीन | रेवती | 2 | बुध | सूर्य | सम राशि | 1.26 | अमात्य | मातृ | जन्म |
| मंगल | व | | 17:40:25 | मीन | रेवती | 1 | बुध | बुध | मित्र राशि | 1.33 | भ्रातृ | भ्रातृ | जन्म |
| बुध | | | 05:20:07 | कन्या | उ०फाल्गुनी | 3 | सूर्य | बुध | उच्च राशि | 1.21 | ज्ञाति | ज्ञाति | क्षेम |
| गुरु | | | 11:22:54 | वृष | रोहिणी | 1 | चंद्र | मंगल | शत्रु राशि | 1.20 | पुत्र | धन | प्रत्यारि |
| शुक्र | | | 27:43:05 | मिथु | पुनर्वसु | 3 | गुरु | शुक्र | मित्र राशि | 1.26 | आत्मा | कलत्र | मित्र |
| शनि | व | | 02:13:44 | धनु | मूल | 1 | केतु | शुक्र | सम राशि | 0.96 | कलत्र | आयु | सम्पत |
| राहु | | | 20:23:00 | कुंभ | पू०भाद्रपद | 1 | गुरु | गुरु | मित्र राशि | | --- | ज्ञान | मित्र |
| केतु | | | 20:23:00 | सिंह | पू०फाल्गुनी | 3 | शुक्र | गुरु | शत्रु राशि | | --- | मोक्ष | विपत |

## लग्न-चलित

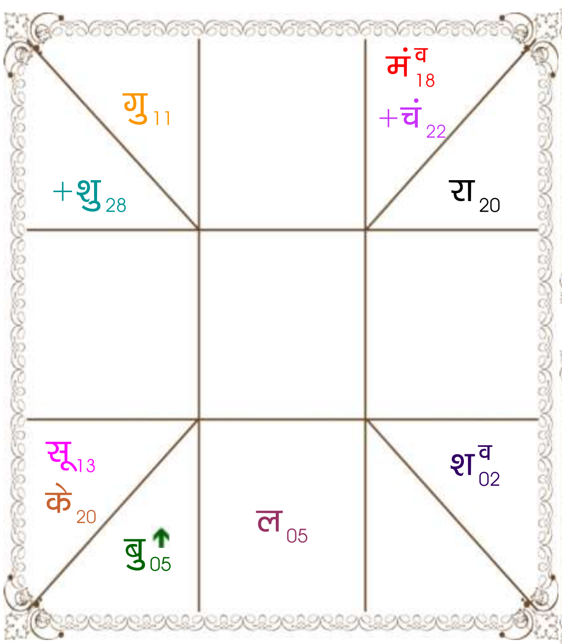


## चन्द्र कुंडली

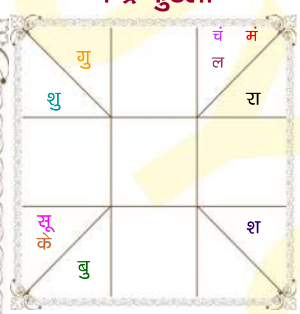

## नवमांश कुंडली

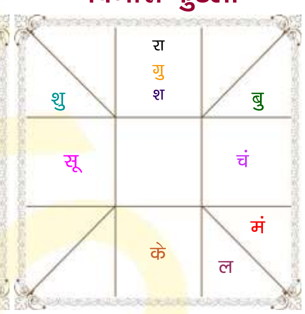

## सर्वाष्टकवर्ग

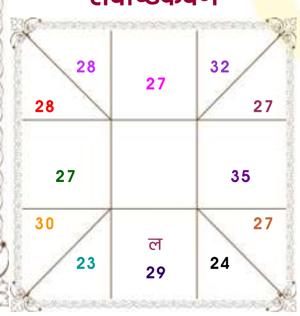


## दशमांश कुंडली

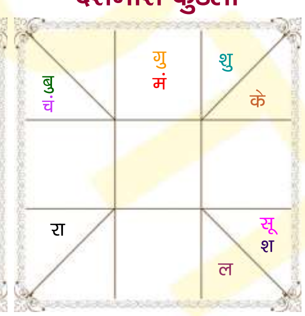

RATNA JYOTI®
Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan, W.B., India, Zip-713322
Phone: +91-341-2668022, Mobile: +91-9732150484, Whatsapp: +91-9732150484
E-Mail: astrology@ratnajyoti.com, Website: https://www.ratnajyoti.com/

# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

**पितृ की पहचान :**

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

**पितृ दोष उपाय :**

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।**
**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

## पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

## आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम् भाव में राहु स्थित है एवं शनि से दृष्ट है।
- पंचम् भाव का स्वामी शनि है तथा उस पर राहु का प्रभाव है।
- नवम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।
- लग्नेश शनि व राहु दोनों से प्रभावित है।

आपकी कुडली में शनि और राहु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में राहु पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ शनिवार गाय को सवा

पांच किलो जौ सवा किलो गुड़ में मिलाकर खिलाना चाहिए। सूखे गोले में पंजीरी भरकर काले कपड़े में लपेटकर किसी सुनसान जगह पर मिट्टी में दबाएं। कबूतरों को दाना, चींटी को आटा तथा मछलियों को आटे की गोली बनाकर खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

**नोट :**

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।